अब ईसर गौरादें जी के घर आये। ईसर जी जीमने बैठे जितना बनाया सब जीम गये। अब गौरादें जी जीमने बैठी तो मां बोली, 'बेटी मैं थोड़ा और भोजन बनाती हूँ', तो बेटी बोली, 'माँ मैं तो बेटी हूँ कुछ भी खा लूंगी और गौरादें जी ने जला बाट्या और बथुऐं की पींडी खाकर, लोटा भर पानी पी लिया। माँ ने सीख दी। वहां से निकलकर ईसर गौरादें पीपल के नीचे आये। ठंडी छाव में थकी हुई पार्वती जी को नींद आ गई। ईसर जी ने पार्वती के पेट की ढ़कणी खोली, देखा तो जला बाट्या और बथुऐं की पींडी थोड़े से पानी के साथ पड़ी थी ईसर जी ने ढ़कणी वापस ढ़क दी। पार्वती जी जागे तो ईसर जी ने पूछा, गौरादें क्या–क्या जीमा ?' गौरादें बोली जो आपने जीमा वो ही हमने जीमा। ईसर कहने लगे, 'पार्वती सच बोलो।' गौरादें बोली रसोई में माँ भेद थोड़ी करेंगी। ईसर जी बोले देखो गौरादें तुम्हारे पेट में जला बाट्या और बथुऐं की पींडी के अलावा थोड़ा सा जल है। गौरादें बहुत नाराज हुई और बोली, 'देखो भगवान आज तो आपने मेरी पेट की ढ़कनी खोली ऐसा जगत के साथ मत करना। पीहर की बात ससुराल में ओर ससुराल की बात पीहर मे नहीं कहनी चाहिये।' पार्वती इतना बोली और ईसर गौरादें जी वापस कैलाश पर्वत के लिए रवाना हुए। आगे देखा राजा के यहाँ शहनाईयां बज रही हैं, लोग खुशियाँ मना रहे है। रानी बहुत खुश हैं, गौरादें बोली, 'कुंवर होने पर इतनी खुशी होती है। आप मेरी गांठ कृपया कर के खोल दे। ईसर जी बोले, 'पार्वती मैंने पहले ही कहा था मेरी गांठ खोले नही खुलेगी।' आगे घोड़ी के बच्चा हुआ वह अपने बच्चे को प्यार से चाट रही थी वह बहुत प्रसन्न थी। पार्वती बोली, 'भगवान आप मेरी गांठ खोलो।' महादेव जी बोले, 'ये गांठ नही खुलेंगी।' आगे गाय अपने बच्चे को प्यार से चाट रही थी और बहुत खुश हो रही थी और उस गाय की मालकिन भी बहुत खुश थी। पार्वती जी सोचे जानवरों को बच्चों की इतनी उमंग है तो मानव की तो बात ही क्या है। और ईसर जी से बोली, 'भगवान मेरी गांठ खोलो नहीं तो मैं आगे नहीं चलूंगी।' पर ईसर जी बोले अब कुछ नहीं हो सकता। थोड़े दिन बीते पार्वती ने अपने मैल का पिंड बनाया और उसमें प्राण फूंके। उस बालक को रखवाली रख के पार्वती जी स्नान करने गई। भगवान